नावशी गाँव में सर्वेक्षण

नाम : हर्षद पटगार

कक्षा : एम। ए। प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक: 23P0140008

PR No: 20190780

विषय : HIN–528 भाषा और साहित्य : सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

13/20

8/5/24.

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल २०२४

परीक्षक :

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

अनुक्रमाणिका		
क्रमांक	विषय	पृष्ट क्रमांक
1	प्रस्तावना	1.
2	सर्वेक्षण का अर्थ, प्रकार	2.
3	गाँव का परिचय	3.
4	सर्वेक्षण सगुण काणकोणकर का साक्षात्कार	4.
5	गाँव की समस्याएं	6
6	सामाजिक परिवेश	7
7	सांस्कृतिक परिवेश	8-13
8	व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति	14-15
9	शैक्षाणिक स्तिथियाँ	14
10	स्वास्थ्य संबंधी स्तिथि	15.
11	यातायात और अन्य स्तिथियाँ	17
12	निष्कर्ष	18

प्रस्तावना

सर्वेक्षण एक ऐसा काम हैं जो करना बहुत कठिन हैं। पर यह काम उतना ही रोमांचक हैं। गोवा विश्वविदयालय से हम बच्चो को यह मौका मिला की हम इस काम को कर सके। हमारे पाठ्यक्रम में हमे किसी एक गाँव का सर्वेक्षण करना था। इस बार हम लोगो ने नवशी गाँव को चुन लिया। हमारा सर्वेक्षण 2 दिन का था और कम ३ गट बनाये गए थे। ४ और ५ अप्रैल २०२४ के सुबह १० से शाम ५ बजे तक इस सर्वेक्षण की हम लोगो ने किया था। हम जब गाँव में पहुचे तो पहले लगा था की गाँव में विकास उतना नहीं होगा पर गाँव में अलग नजारा था। गाँव के घर आधे पैमाने पर पक्के सीमेंट से बने थे। गाँव में लोग मछली पकड़ने के साथ साथ सरकारी और प्राइवेट सेक्टर में काम भी किया करते थे। हम ३० से ४० घरो का सर्वेक्षण किया क्योंकि समय बहोत कम था। समय की वजह से हमे उतनी जानकारी नहीं मिल पाई जितनी हमे उसकी जरुरत थी। हम लोग सुबह गए थे इसीलिए लोगो से उतना मिल नहीं पाए क्योंकि उस वक़्त लोग काम पर गए थे। पर हमे पता था की 1 बजे वह घर वापस आते हैं। पर दोपहर में उनके घर जाकर उनसे पूछताछ करना थोडा अस्वाभाविक काम था। हमे कुछ घर ऐसे मिले जिन्होंने हमे बहोत अच्छे से जानकारी दी और एक घर में हमे फल भी खाने के लिए दिए। कुछ घर पर लोगो का बर्ताव थोडा अलग था क्यूंकि उन्हें लगा की हम इलेक्शन की वजह से आये हैं तो लोग डर गए। गाँव में हमे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के बारे में पता चला। सामाजिक समस्या सबसे बड़ी मरीना बे थी। सांस्कृतिक परिवेश में धालो और जागोर जैसे त्यौहार आते हैं। गाँव दो जगह में बटा हुआ हैं। गाँव में यातायात सुविधा उतनी नहीं हैं पर गाँव के लोगो के पास गाड़ियाँ हैं। कोई भी दूकान या होटल नहीं हैं। लोग सामान लाने के लिए बाम्बोली जाते हैं। सर्वेक्षण करते वक़्त हमारे साथ ४ मुस्लिम लडकियाँ थी और उनका रोजा चल रहा था। इसी कारण हमें भी खाने का मन नहीं कर रहा था। धुप भी इतनी थी की हम लोग थक जाते थे। पर किसी भी तरह हम लोगो ने यह सर्वेक्षण कर लिया। गाँव में एक बार तो कुत्ते पीछे लग गए थे पर मेरे साथ हमारी शिक्षिका और हमारी क्लास का लड़का होने की वजह से हमने संभाल लिया। कुल मिलकर ९ लड़कियां और 2 लड़के थे और 1 शिक्षिका। हम सबको मिलाकर हम १२ जन का एक पूरा गट था। इस 2 दिन के सर्वेक्षण में हमे सिखने को बहुत कुछ मिला और नयी जानकारी के साथ पुरे गट के साथ मजा आया। इस प्रकार का सर्वेक्षण हर बार होना चाहिए क्यूंकि इससे ज्ञान तो बढ़ता ही हैं साथ ही में एकसाथ काम करने में भी मजा आता हैं। एक दुसरे के विचार कैसे होते हैं, बाहरी परिवेश कैसा होता है यह सभी जानने को मिलता हैं।

सर्वेक्षण क्या होता हैं?

सर्वेक्षण एक शोध उपकरण है, जिसमें आमतौर पर पूर्वनिर्धारित प्रश्नों की एक सूची शामिल होती है। ये प्रश्न लक्षित दर्शकों से प्रश्नावली के रूप में पूछे जाते हैं। सर्वेक्षण का लक्ष्य जानकारी इक्कठा करना है। सर्वेक्षण डेटा में विशिष्ट जानकारी के बिंदु एकत्र किये जाते हैं और उसका निष्कर्ष निकाला जाता हैं। सर्वेक्षण को बहुत विशिष्ट दर्शकों पर बारीकी से लक्षित किया जाता और उसे राष्ट्रीय या वैश्विक स्तर पर बहुत बड़े पैमाने पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

सर्वेक्षण के प्रकार :

1| बाजार अनुसंधान सर्वेक्षण (Market research surveys)

2| बिक्री सर्वेक्षण (Sales surveys)

3| ग्राहक सहायता सर्वेक्षण (Customer support survey)

4 टेलीफोन सर्वेक्षण (Telephone surveys)

सर्वेक्षण कैसे करे?

सर्वेक्षणों की शक्ति और क्षमता असीमित हैं - यदि आप जानते हैं कि उन्हें सबसे प्रभावी तरीके से कैसे बनाया जाए। जब एक सर्वेक्षण बनाने की बात आती है, तो प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को अनुकूलित करने के लिए समय और सावधानी बरतते हुए, कार्य को चरणों की एक श्रृंखला में विभाजित करें। सफलता के लिए स्पष्ट रूप से परिभाषित मापदंडों के साथ, एक ठोस परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रभावी सर्वेक्षण निर्धारित किए जाते हैं।

1| सर्वेक्षण के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य प्राप्त करें

2| अपने सर्वेक्षण की सफलता और वैधता के लिए पैरामीटर निर्धारित करें

3| अपना सर्वेक्षण डिज़ाइन करें

4| अंत में, अपने सर्वेक्षण का परीक्षण करें

गाँव का परिचय :

सर्वेक्षण के लिए जिस गाँव मैं हम गए थे उस गावं का नाम नाव्शी हैं। नावशी गावं गोवा विश्वविद्यालय द्वारा दत्तक लिया गावं हैं। गावं में कुल मिलाकर 100 के आस पास घर होंगे। लघभग ४०० के आस पास लोग वहाँ रहते हैं इसका अनुमान लगाया जाता हैं। यह गाँव समंदर के किनारे बसा हुआ गावं हैं जो बेहद खुबसूरत और विशाल हैं। किनारे पर रहकर बायीं और दायने बाम्बोली और वास्को गावं की कुछ छवियाँ दिखाई पढ़ती हैं। गाँव के लोग ज्यादा तर लोग मछली बेचने का धंदा करते हैं। गाँव का वातावरण इतना सुंदर हैं की वही बस जाने का मन करता हैं। समंदर तट के किनारे उनकी नाव लगी रहती हैं। इन दिनों मई महीनो में वह लोग सुबह ५ बजे मछली पकड़ने जाते हैं और ९ बजे वापस आते हैं। बहोत से लोग जाल बुनने का काम करते हैं क्योंकी बाजर से जाल लाना महंगा होता हैं। गाँव के लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं तो उन्होंने यह व्यवसाय चुना पर आज की स्थिति बहुत भिन्न हैं क्योकि उनके बच्चे आज पढ़े लिखे हैं और वह सरकारी नौकरी करते हैं। ज्यादा तर गाँव में गावडा लोग रहते जो एक निम्न वर्गीय जाती हैं जिसे अंग्रेजी में ST कहते हैं। लोग हिंदी, मराठी जैसी भाषा बोलना जानते पर बहोत कम। पर उनके बच्चो को यह भाषाए आती हैं। हालाँकि जब हम गाँव में गए तो लगा था गाँव कच्चे घरो का बना होगा पर वहा जाकर देखा तो अलग नजारा था क्योंकि ज्यादा तर घर पक्के हे और सीमेंट से बने थे। गाँव में शिगमो, होली, ढालो, जागोर जैसे बहूत से सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं। मैं जहा रहता हूँ वहा पर धालो औरतें खेलती हैं पर यहाँ इस गाँव में धालो आदमी लोग खेलते हैं। बात थोड़ी अजीब हैं पर बहुत दिलचस्प थी। ।यातायात की सुविधा भी गाँव में नहीं हैं। लोग अपनी अपनी गाडियों का इस्तेमाल करते हैं। लोग यह बता रहे थे की उन्होंने रास्ता बनाया था बाद में जाकर सरकार ने पक्का रास्ता बनाया। गाँव में अगंणवाडी भी नहीं हैं। जब वह जाकर देखा तो शिक्षिका उन्हें अपने घरो में ही पढ़ा रही थी। नजदीकी अस्पताल भी उनके लिए बाम्बोली का GMC अस्पताल है। जब लोगो से बात से चीत की तो सबसे बड़ी समस्या मरीना बे जो सरकार द्वारा लायी गयी एक परियोजना हैं जो लोगो को काम देने में मदत करेंगी। अब लोगो का मानना है की यह योजना सिर्फ उनकी आँखों में धुल झोकने के लिए हैं। क्योंकि जब ग्रैंड हयात जैसे होटल वहा पर बनाया गया तभी उनसे यही वादे किये गे थे की उनको काम दिया जायेगा पर सिर्फ उन्हें धोका मिला यह गाँव के लोगो का कहना हैं।

सर्वेक्षण

सगुण काणकोंणकर का साक्षात्कार

सर्वेक्षण हमारा पाठ्यक्रम में लगा हुआ था तो हमें उसी प्रकार से जानकारी हासिल करनी थी। इसी लिए हम लोग पहुँचे पहले सगुण काणकोंणकर जीं के घर। सगुण जी बहोत सरल और सभ्य इंसान हैं। उन्होंने हमारी काफी मदत की। सबसे पहले हमने उन्ही के घर से शुरुवात की। उनका जन्म फोंडा में हुआ था। माँ बचपन में गुजर जाने की वजह से उनके पिता ने उन्हें नावशी गाँव में छोड़ा। कोई भी नहीं था उनके साथ। अपने दम पर उन्होंने अपना घर बार बनाया। किसी भी तरह से उन्हें मदत नहीं मिली थी। वह ज्यादा पढ़े लिखे नहीं हैं क्यूंकि पैसे न होने की वजह से वह कम किया करते थे। वो एक ऐसे इन्सान जो जीते जागते नयी पीढ़ी के लिए उदहारण हैं। उन्होंने अपने ज़िन्दगी में बहुत संघर्ष झेले हैं। वह पहले पेंटिंग का कम किया करते थे। किसी कारण वश उनकी मजदूरो के साथ अनबन होने से वह काम छोडके वह मजदूर बने। घर बनाने का काम शुरू किया। अंत में जाकर उन्होंने खेती शुरू की और एक खुशाल ज़िन्दगी जी रहे हैं। उन्होंने हमे गाँव के बारे में थोड़ी बहोत जानकारी दी. सर्वेक्षण में साक्षात्कार लेना जरुरी था. तो साक्षात्कार के लिए मैंने उन्हें चुना था.

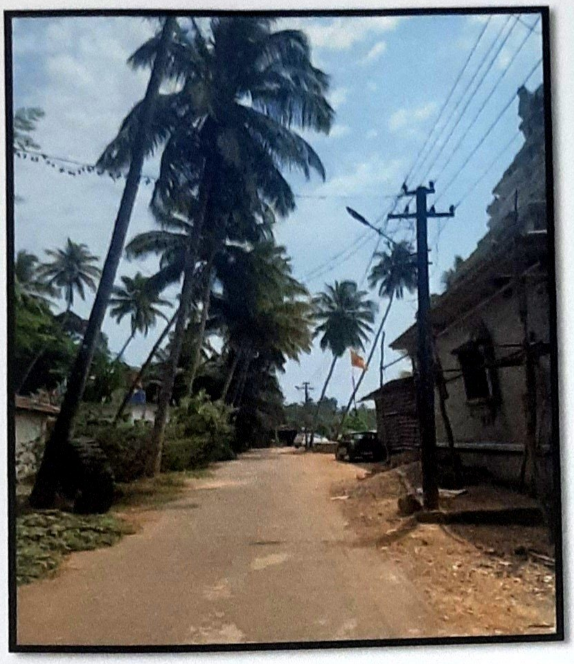

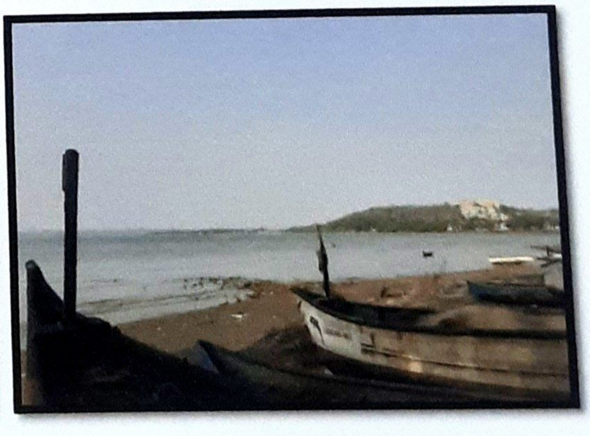

सामाजिक समस्याएं : 'मरीना बे'

गाँव में हमे पता चला की वह लोग एक बड़ी समस्या से जूज रहे है। वह थी मरीना बे। मरीना बे एक ऐसी समस्या बं चुकी हैं जिससे पूरा गाँव ग्रस्त हैं। गाँव में मरीना बे आने की वजह से उनका व्यसाय मुख्यता खत्म हो जायेगा। गाँव के ज्यादा तर लोग मरीना बे की वजह से बेघर हो जायेंगे क्योकी गाँव के लोग मछली पकड़ने का धंदा करते हैं। आधा गाँव पूरा तबाह हो जायेंगा। साथ ही साथ गाँव जितनी भी पर्यावरण की खुबसुरती हैं वह नष्ट हो जाएँगी।

मरीना बे पिछले दस सालो से आने का सोच रही हैं। मरीना बे को सिर्फ लोगो ने रोख कर रखा हैं। यह गाँव के लोगो का कहना हैं। गाँव के लोग बता रहे थे तक़रीबन १००००० लाख sqm^2 जगह उन्होंने ली हैं। इसका मतलब हैं की पुरे नावशी गाँव के साथ बम्बोली, शिरदोना, मिरामार यहाँ तक की वास्को का हिस्सा भी गायब हो जायेगा। विकास होना सही बात हैं पर विकास के नाम पर जब लोगो के पेट पर लात मारा जाता हैं तों वह लालच का नाम हैं यह लोगो का कहना हैं।

मरीना बे से नुक़सान :

गाँव में १०० घर हैं और उनमे से कुछ लोग हैं जिनके पास सरकारी नौकरिया हैं पर गाँव में आधे लोग ऐसे जिन्हें किसी भी तरह की नौकरी नहीं मिल सकती हैं अगर मरीना बे आती हैं। ग्रैड हयात ने भी उनसे नौकरी देने का वादा किया और कुछ नही किया। मरीना बे के साथ साथ गोवा आलदेया भी अपनी नई इमारत बना रही हैं जो गांव के बहुत नजदीक हैं। मरीना बे की वजह से पूरा गांव एक पर्यटन स्थल बन जायेगा और गाँव का पूरा पर्यावरण समाप्त ही जायेगा। पर्यावरण की मिट्टी में प्रदूषण होने की वजह से वह उपजाऊ जमीन के तत्व ख़त्म हो जायेंगे। साथ ही में वहां पर बच्चो को बुरे लत भी लग सकती हैं क्योंकि वहाँ कैसिनो का निर्माण होगा। समंदर में पानी का भी दुष्परिणाम होगा क्योंकि मछलियां भी मर जाएंगी और साथ ही में मछवारो का व्यवसाय भी खत्म हो जाएगा आम तौर पर देखा जाए तो मरीना सिर्फ और सिर्फ नुक़सान कराएगा

येवकार

सांस्कृतिक परिवेश

नावशी गांव का सांस्कृतिक परिवेश बहूत ही प्यारा और रोचक हैं। नावशी समंदर के किनारे बसा हैं तो उनके और अन्य गांवों के सांस्कृतिक परिवेश में बदलाव हैं। जब हम सर्वेक्षण कर रहे थे तब नावशी गाँव के धालो के बारे में पता चला। अन्य गांव में धालो औरतों द्वारा खेला जाता हैं पर नावशी में आदमी लोग खेलते हैं। इसकी शुरुआत को 60 साल से भी ज्यादा हो चुके हैं। धालो के अलावा जागोर भी उनका सबसे महत्वपूर्ण त्योहार हैं।

जागोर पूरे 5 दिन त्योहार हैं और वह मई महीने में खेला जाता है। जागोर रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक चलता हैं। गाँव में 2 मंदिर हैं। एक गणपति का और दूसरा सातेरी केलबाय देवी का। जागोर वही खेला जाता हैं। गांव दो हिस्सों में बात जाने के कारण वहां पर 2 जागोर खेले जाते हैं। शिगमो और होली भी वहां पर खेली जाती हैं

शिगमो में वह लोग सातेरी देवी की पुजा करके नमन करते हैं और वहां से नीचे समंदर किनारे की ओर एक दीपक जलाते है। वही पर गणपति जी का विसर्जन स्थान है और समंदर के नीचे ही एक स्थान जहाँ बेताल देव जो नावशी के ग्राम देवता हैं वह वास करते हैं। बेताल देव के साथ रवळनाथ और मल्लिकार्जुन भगवान का भी निवास स्थान है।

नावशी गाँव का जागोर त्यौहार

गौड़ा गोवा के पहले निवासियों में से हैं जो अब अनुसूचित जनजाति समुदायों में शामिल हैं। उनके पास एक समृद्ध लोक संस्कृति थी लेकिन, कई लोक कलाएँ पहले ही विलुप्त हो चुकी हैं। हालाँकि, कुछ लोक कलाएँ ऐसी हैं जिनका पालन आज भी किया जाता है, जो प्राचीन काल में उनकी जड़ों का संकेत देते हैं। रणमाले, ज़गोर और कालो उनके कुछ लोक नाटक हैं।

ज़ागोर पारंपरिक लोक नाटक का एक रूप है जो पूरे समुदाय पर लोक देवता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रतिवर्ष किया जाता है। यदि लोकनाट्य परंपरा के अनुसार नहीं किया गया तो आदिवासियों को लगता है कि उन्हें देवता के क्रोध का सामना करना पड़ेगा। इससे बचने के लिए वे बिना किसी असफलता के ज़ागोर का प्रदर्शन करते हैं।

पहले, गौड़ा समुदाय की संस्कृति सरल थी और उनके पास पढ़ने-लिखने की कोई व्यवस्था नहीं थी। ज़ागोर ने अशिक्षित लोगों के बीच लोकप्रियता हासिल की है, जो स्वाभाविक रूप से लेखक या संगीतकार के बारे में कभी चिंता नहीं करते हैं।

बम्बोली के पास कुर्का ग्राम पंचायत की एक छोटी सी बस्ती नावशी में गौड़ा समुदाय की बस्ती है। हालाँकि नौक्सी शहरी केंद्रों के बहुत करीब है, फिर भी यहाँ रहने वाले गौड़ों ने लोककथाओं के साथ अपना जुड़ाव बनाए रखा है।

वासु काणकोणकर , जो नावशी गाँव के एक निवासी हैं, जागोर करने से पहले आवश्यक विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होते हैं। नावशी को एक झरने और एक झील का आशीर्वाद प्राप्त है। जागोर के दिन, झील पर घी का दीपक जलाता है और इस दीपक का पानी फिर लाया जाता है और घर के गर्भगृह के अंदर रखा जाता है। भगवान का आह्वान करने के बाद, लगभग 10 बजे रात में, सभी लोक कलाकार और ग्रामीण एक पवित्र स्थान, मांड में आते हैं, जहां वे प्रार्थना करते हैं और लोक देवता और अन्य देवताओं से लोक नाटक की सफल प्रस्तुति के लिए आशीर्वाद देने का आग्रह करते हैं।

ज़गोर का प्रदर्शन 'नमन' जैसे भक्ति गीतों के गायन से शुरू होता है जिसमें लोक कलाकार विभिन्न देवी-देवताओं का आह्वान करते हैं। इसके बाद लोक कलाकार अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर लोक संगीत की धुनों पर मंच पर आते हैं।

<u>जागोर का गीत आदीवन</u>

आदीवन बाप्पा गा गणपती देवा

ब्रह्मदेव आनी विष्णू शंकर ।।२।।

तिगूय मेळून गा एक दत्तगुरु ।।२।।

कृपा दिगा बाप्पा आदी अनंता ।।३।।

दत्तगुरु तुका नमन नमन, दत्तगुरु।।।।।

नमन म्हजे गा सातेरी माते ।।२।।

आदिवाश्यांचे गे मूळ देवते ।।२।।

महाकाली महा शालिनी सते ।।२।।

बुद्धी सुबुध्दिचे विद्याधन दाते ।।३।।

सातेर मायें तुका नमन नमन।।।।।

नमन म्हजें गा मुळाण्या गुरु ।।२।।

ताणें धरिला गा सर्वयांचे मूळ ।।२।।

ताणे घेतिला गा बेरो अवतार ।।२।।

तेच्या उपकारांत सगलो संवसार ।।३।।

गुरुदेव तुका नमन नमन ।।।।।

नमन म्हजें गा बसलेले सभेक ।।२।।

सभे मुखावयल्या सगल्या भोवसाक ॥२॥

जागरा मांडावयले रंग देवतेक ।।२।।

जागरा मांडावयले रंग देवतक ।।३।।

रंग देवते तुका।।।।।

नमन म्हजें गा आदी समेस्तांक ।।२।।

वसुंधरे वयल्या देव दैवतांक ।।२।।

देव दैवतांक गा भागिवंतांक ।।२।।

ताणी वसयलेल्यां पवित्र थळांक ।।३।।

देव देवता तुमकां नमन नमन ।।।।।

नमन म्हजें गा देवकी पुता ।।२।।

चराचर तुज्या गा चरणा लागता ।।२।।

चरणा लागता गा पावन जाता ।।२।।

नाम मंत्र तुजो मुखी धरिता ।।३।।

देवकी पुता तुका नमन नमन ।।।।।

लोकमनात जेन्ना पडटा अंधकार ।।२।।

शिकवण दिवंक तेन्ना येता दत्तगुरु ।।२।।

नावांत तेच्या गावता धीर आदार ।।३।।

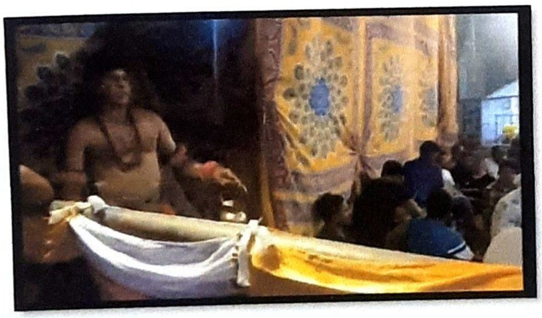
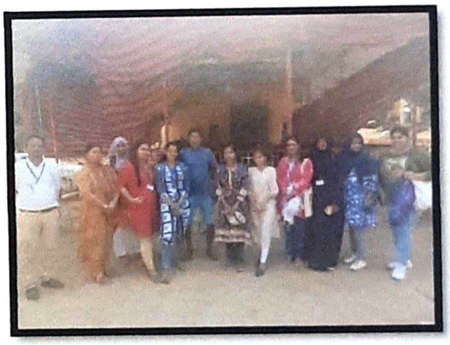

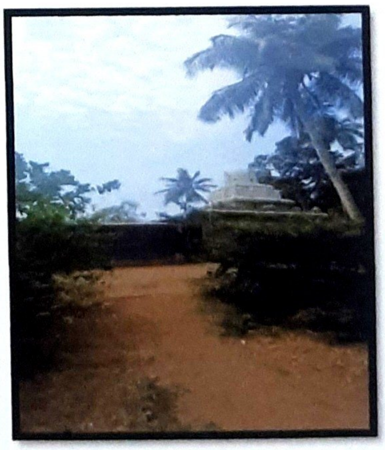

दत्तगुरु तुका नमन नमन ।।।।।

आदिबाप्पा गा तूं आदी परमेश्वर ।।२।।

तुवें निर्मिला गा सगलें चराचर ।।२।।

तुजें रूपणे गा निर्गुण निराकार ।।३।।

आदिबाप्पा तुका नमन नमन ।।।।।

यह जागोर सातेरी केळबाय जी के मंदिर में खेला जाता हैं। ज़ागोर में पुरुष कलाकार महिलाओं की भूमिका निभाते हैं। जागोर में रामायण के पात्रों का प्रदर्शन करते हैं जैसे और सीता हरण, लंका दहन जैसे नाटक का प्रदर्शन होता हैं। यह जागोर रात 10:00 बजे से सुबह 6:00 तक 12 घंटो का खेला जाता हैं। यह पुरे ५ दिनों तक चलता हैं। वासु काणकोणकर जी इस जागोर में अपना पूरा सहयोग देते हैं। रात भर वह पूरा प्रदर्शन करते हैं। इसमें जोपद या फिर गाने गाए जाते हैं वह आठ आठ छदो में होते हैं।

ज़ागोर का प्रदर्शन करते समय, पौराणिक कथाओं पर आधारित कोई निश्चित कहानी नहीं होती है, बल्कि दिन-प्रतिदिन के अनुभवों और घटनाओं को सबसे दिलचस्प तरीके से साझा किया जाता है।रात 10 बजे शुरू होने वाला ज़गोर लगभग दस घंटे तक जारी रहता है। अतीत में, जब मनोरंजन के कोई आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे, ज़गोर जैसे लोक नाटक ग्रामीणों का मनोरंजन करते थे। ज़ागोर पारंपरिक ग्रामीण जीवन पहलुओं से संबंधित है और आम तौर पर इसे गोवा में आधुनिक रंगमंच का अग्रदूत माना जाता है।

धालो का त्यौहार:

अक्सर गाँव में देखा जाता कि धालो जो त्यौहार है वह औरतें खेलती है पर नावशी गांव में जब हमने पूछा लोगों से तो पता चला कि धालो त्यौहार आदमी खेलते हैं और यह थोड़ा दिलचस्प था जानने के लिए की यह कैसे खेला जाता है। यह ५ रातों तक चलता हैं और उनके गीत भी अन्य धालो गीत से अलग होते हैं।

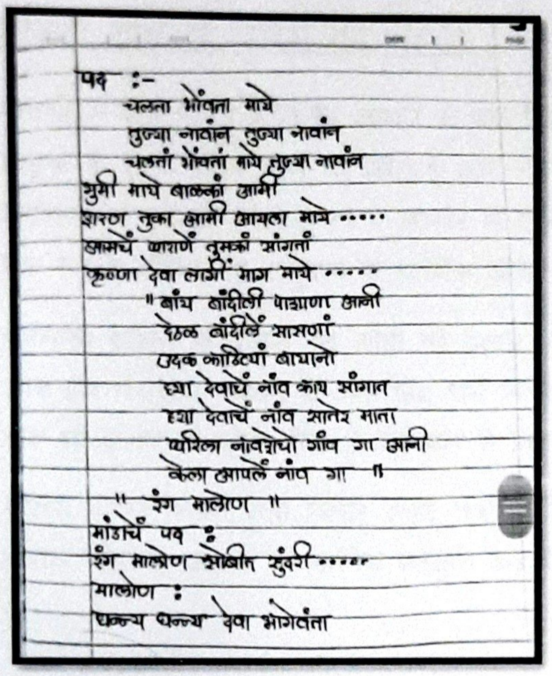
पद :-
चलता भोंवता माये
तुज्या नावांन तुज्या नावांन
चलतां भोंवतां माये तुज्या नावांन
भुमी माये बाळकां आमी
शरण तुका आमी आयला माये .....
आमचें थाराणें तुमकां सांगतां
कृष्णा देवा लागीं माग माये .....
॥ बांध बांदीली पाशाणा आनी
देळ बांदीलें सासणां
उदक काडियां बायानो
ह्या देवाचें नांव काय सांगात
ह्या देवाचें नांव सातेर माता
धरिला नावश्राचो गांव गा आनी
केला आपलें नांव गा ॥
॥ रंग मालोण ॥
मांडाचें पद :
रंग मालोण शोबीत सुंदरी .....
मालोण :
धन्न्य धन्न्य देवा भोगवंता

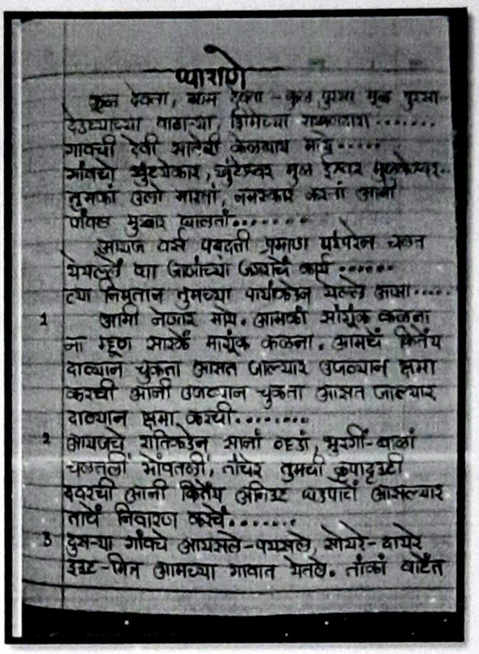
धाराणे
कुळ देवता, ग्राम देवता - कुळ पुरुष मूळ पुरुष
देवस्थानच्या वाडाच्या, झिमच्या गावकरांचा ....
गावची देवी सातेरी केळबाय माय .....
गांवचो खुंटयेकार, धुंरेश्वर मूल ईस्वार मुळकेश्वर..
तुमकां उलो मारतां, नमस्कार करतां आनी
पांयांक मुजार घालतां.......
आयज वर्स पद्दती प्रमाणा परंपरेन चलत
येयल्लें या जागांच्या जत्रेचें कार्य ....
त्या निमुतान तुमच्या पायांकडेन मल्लो आसा.....
1 आमी नेणार भोग. आमकां सोंयूक कळना
ना म्हूण सारकें मागूंक कळना. आमचें कितेंय
दाव्यान चुकता आसत जाल्यार उजव्यान क्षमा
करची आनी उजव्यान चुकता आसत जाल्यार
दाव्यान क्षमा करची........
2 आयजचें रातिकडेन सानां व्हडां, भुरगीं-बाळां
चलतलीं भोंवतलीं, तांचेर तुमची कृपादृष्टी
दवरची आनी कितेंय अनिश्ट वाइपाचें आसल्यार
तांचें निवारण करचें.......
3 दुसऱ्या गांवचे आयसले-पयसले, सोयरे-धायरे
इश्ट-मित आमच्या गावात येतले. तांकां वाटेंत

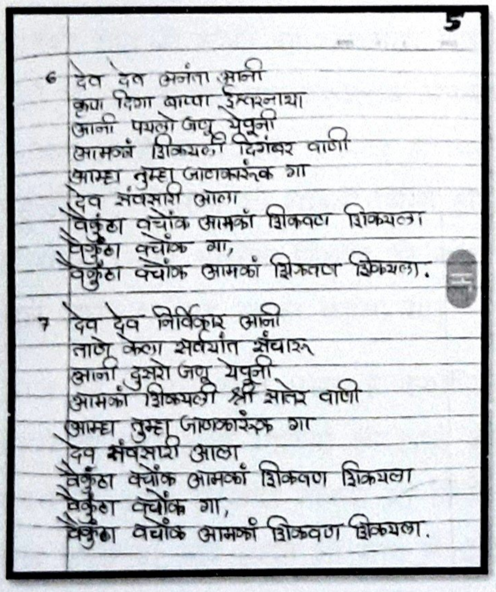
5
6 देव देव अनंता आनी
कृपा दिशा बाप्पा ईस्वरनाथा
आनी पयलो जणु येवुनी
आमकां शिकयली दिगंबर वाणी
आम्हा तुम्हा जाणकारेंक गा
देव संवसारी आला
वैकुंठा वचोंक आमकां शिकवण शिकयला
वैकुंठा वचोंक गा,
वैकुंठा वचोंक आमकां शिकवण शिकयला.
7 देव देव निर्विकार आनी
ताणे केला सर्वयांत संचारु
आनी दुसरो जणु येवुनी
आमकां शिकयली श्री सातेर वाणी
आम्हा तुम्हा जाणकारेंक गा
देव संवसारी आला
वैकुंठा वचोंक आमकां शिकवण शिकयला
वैकुंठा वचोंक गा,
वैकुंठा वचोंक आमकां शिकवण शिकयला.

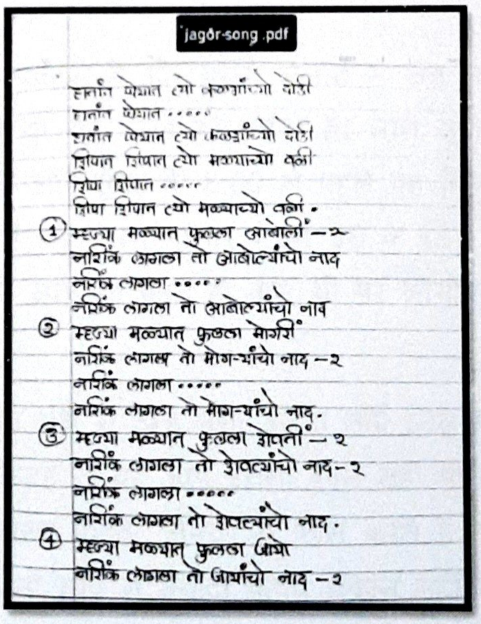
jagôr-song .pdf
हातांत घेयात त्यो कळयांच्यो दोरी
हातांत घेयात .....
हातांत घेयात त्यो कळयांच्यो दोरी
शिंपान शिंपान त्यो मळ्याच्यो वळी
शिंपा शिंपान .....
शिंपा शिंपान त्यो मळ्याच्यो वळी.
(1) म्हज्या मळ्यान फुलला आबोली -२
नाकिंक लागला तो आबोल्यांचो नाद
नाकिंक लागला .....
नाकिंक लागला तो आबोल्यांचो नाद
(2) म्हज्या मळ्यात फुलला मोगरीं
नाकिंक लागला तो मोगऱ्यांचो नाद -२
नाकिंक लागला .....
नाकिंक लागला तो मोगऱ्यांचो नाद.
(3) म्हज्या मळ्यान फुलला शेवतीं -२
नाकिंक लागला तो शेवत्यांचो नाद-२
नाकिंक लागला .....
नाकिंक लागला तो शेवत्यांचो नाद.
(4) म्हज्या मळ्यात फुलला जायो
नाकिंक लागला तो जायांचो नाद -२

नावशी गाँव में ख़ुरिस का महत्व

नावशी में एक पवित्र क्रॉस है। ज़ागोर से एक दिन पहले, शाम को, हिंदू गौड़ा ग्रामीण अपने ईसाई भाइयों के साथ पवित्र क्रॉस पर जाते हैं और मोमबतियाँ जलाकर प्रार्थना करते हैं। यदि भक्तों की मनोकामना पूरी हो जाती है तो वे जागोर में भाग लेते हैं। इस प्रकार, ज़ागोर न केवल मनोरंजन का एक रूप है, बल्कि यह समुदाय के धार्मिक जीवन से भी जुड़ा है।

पुर्तगाली शासन के दौरान कई गौड़ों को ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया था। हालाँकि, 1928 के आसपास मसूरकर स्वामी ने उन्हें हिंदू धर्म में वापस प्रवेश दिया। ये नव-हिंदू गौड़ा पुनर्धर्मांतरण के बाद भी ज़गोर के लोक गीतों के माध्यम से ईसा मसीह के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं।

वेलिंग, घोथन, शिर्डन, कुर्ती, चिंबेल आदि क्षेत्रों में बिखरे हुए गौड़ा समुदाय अप्रैल-मई के महीनों के दौरान मांड पर ज़ागोर की वार्षिक प्रस्तुति देने में हमेशा व्यस्त रहते हैं।

व्यवसाय एवं आर्थिक स्तिथि:

नावशी गाँव में लोगों का व्यवसाय मछली पकड़ने है और पुराने जमाने में जब लोग पढ़े-लिखे नहीं थे तब उन्होंने यह व्यवसाय अपनाया था यह लोगो का कहना है। लोग सुबह 5:00 बजे उठकर अपने जाल लेकर समंदर में जाते हैं और सुबह के 8:00 से पहले वह किनारे तक पहुंचते हैं। जितनी भी मछली मिली होती है वह लेकर बाजार बेचने उसे के लिए जाते हैं। हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति की बात की जाए तो बहुत ही कम थी पर लोगो का घर बार चल जाता था यह उनका कहना था।

आज की स्थिति बहुत अलग है क्योंकि इस धंधे से उन्हें पैसा उतना नहीं मिल पाता जितना पहले था और अभी महंगाई की आने की वजह से वह आप इतना काम नहीं पाते पर उनके बच्चे जो अभी सरकारी नौकरी या किसी अन्य प्राइवेट सेक्टर में काम करते हैं तो उनका घर चल जाता है। जब हमने भी गांव में देखा तो गांव में ज्यादा कच्चे मकान नहीं थे पर पक्के घर थे तो उससे पता चलता है कि उनका जो व्यवसाय है या फिर आर्थिक स्थिति है वह इतनी बुरी भी नहीं है पर किसी भी तरह से उनका घर चल जाता है यह लोगों का कहना है।

शैक्षाणिक परिवेश और हिंदी भाषा का ज्ञान।

गांव में जितने भी बूढ़े लोग हैं उनकी शिक्षा के उतनी नहीं हो पाया है जितनी होनी चाहिए थी। बहुत कम ऐसे लोग होंगे जो शिक्षा के प्रति उसे वक्त आत्मसात थे पर उनके बच्चे नो बहुत ही अच्छे से शिक्षा प्राप्त की है। गांव में हमें उच्च शिक्षा की उपाधि प्राप्त किए हुए

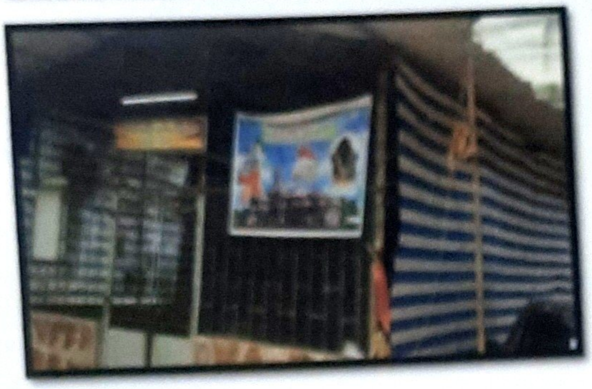

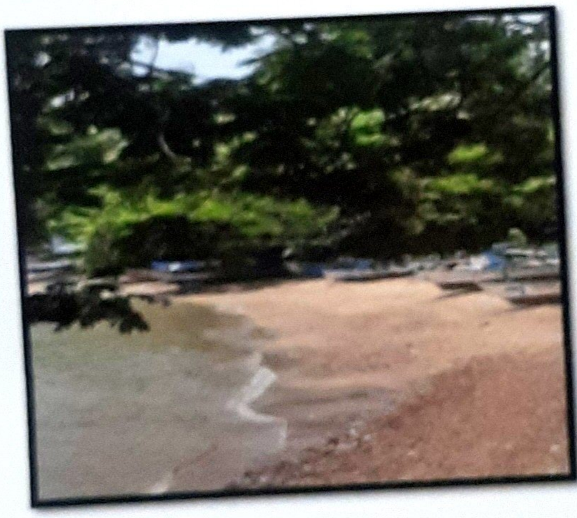
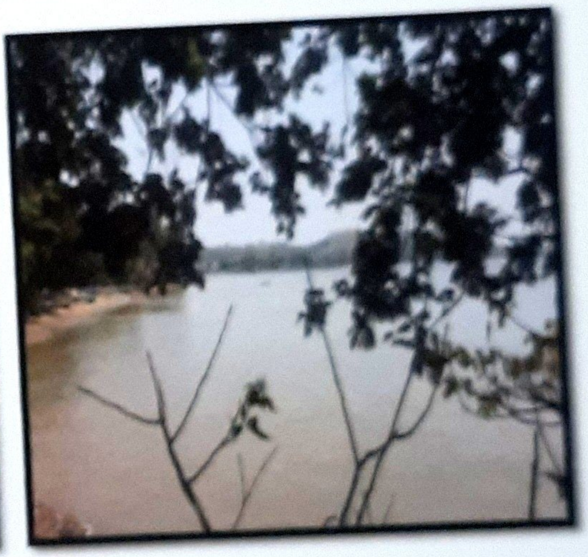

लोग भी मिलते हैं जो गोवा विश्वविद्यालय या अन्य किसी सरकारी या प्राइवेट जगहों में काम करते हैं। अन्य लोगो का शिक्षा के प्रति बहुत ही कम ज्ञान था पर आज के वक्त गांव में जो युवा पीढ़ी है वह शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

गाँव में कोई स्कूल नहीं हैं पर एक छोटो अंगनवाडी के नाम पर घर हैं। उस घर की मालकीन ही वह की शिक्षिका हैं। ५ बच्चे वहा पढने आते हैं। बच्चों को 6 महीनो का स्वास्थ्य जाच की जाती हैं जो महीने में एक बार की होती हैं। उन्हें घर का खाना दिया जाता हैं सारी सुविधा के साथ। अंगन वाड़ी को चलाने के लिए सरकार द्वारा मदत मिलती हैं पर उतनी नहीं जितनी उसकी जरुरत है। शिक्षिका को हर काम अकेले करना पढता हैं। कोई भी काम करने के लिए उन्हें किसी की मदत नहीं डी जाती हैं। मतदान, आभा जैसे जरूरी दस्तावेज भी वही अकेले संभालती हैं यह उनका कहना हैं।

गाँव के बच्चे पढने के लिए नजदीकी स्कूल सांता क्रूज़ में जाते हैं जो गाँव से १० किलोमीटर की दूरी पर हैं। वही जगह उनके लिए थोडी नजदीक होने के कारण वहा उनके बच्चो का दाखिला करवाया गया। गाँव की आर्थिक स्तिथि भी उतनी बुरी नहीं हैं तो इस वजह से बच्चे वहा पढ़ पाते हैं। उनकी दसवी से लेकर उच्च शिक्षा भी गोवा विश्वविद्यालय में हो जाती हैं।

गाँव में लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं थे उस वक्त फिर लोग हिंदी मराठी भाषा बोलना जानते थे पर उतना नहीं पर उन्हें यह भाषाएँ समझ में आती हैं। गाँव के युवा लोग को ज्यादा तर हिंदी भाषा का ज्ञान हैं। वह आज के पीढ़ी से होने की वजह से हिंदी जैसे भाषायों का ज्ञान रखते थे। क्यूंकि पहले उतना शिक्षण के क्षेत्र में विकास नहीं था और बहुत कम ऐसे लोग हे जो पढ़ पाते थे. पर आज की स्तिथि बहुत अलग हैं. लोग अभी पढ़ भी पाते हैं और उपलब्धियाँ भी इतनी हैं की ज्ञान कही न कही से मिल ही जाता हैं.

<u>स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं :</u>

स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की अगर बात करें तो नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र जीएमसी है। गांव के किसी भी इंसान को कुछ भी हो जाता है छोटे या बडे पैमाने पर उन्हें जीएमसी ही नजदीकी अस्पताल है जहां पर वह अपना इलाज कर सकते हैं। हालांकि देखा गया है कि हर एक गांव में उनका एक स्वास्थ्य केंद्र होता है पर इस गांव में कोई भी स्वास्थ्य केंद्र नहीं है। लोग अपने स्वास्थ्य संबंधी जांच का भी ध्यान रखते है। वह हर महीने अपनी जाच करवा लेते हैं। किसी भी बीमारी का इलाज करवाने के लिए इलाज जीएमसी में ही उन्हें करवाना पड़ता हैं क्योंकि वही उन्हें सबसे नजदीकी अस्पताल है। पर अस्पताल नजदीक होने के बावजूद भी वहां पर जितने भी बूढ़े लोग हैं कहीं ना कहीं वह वहां पर नहीं जा पाते किसी

कारणवश तो उनके लिए यह एक अड़चन बन जाती हैं। पर आपातकालिन स्तिथि में एक स्वास्थ्य केंद्र होना बहुत जरूरी हो जाता हैं क्योंकि जी एम सी में काफी सारे लोगो का आना जाना हैं तो हर किसी का वक़्त पर इलाज होना संभव नहीं होता।

यातायात और अन्य समस्या

गांव में यातायात की सुविधा ठीक से उपलब्ध नहीं है गांव में लोग के पास अपनी गाड़ियां हैं। रोज मर्रा के काम के लिए उन्हें इसीका इस्तेमाल करना पड़ता हैं। सरकार द्वारा कोई भी यातायात की सुविधा अभी तक नही कराई गई हैं। गांव में कोई भी किसी भी प्रकार की दुकान या कोई भी होटल नहीं है जहां पर लोग या फिर कोई भी बाहर वाला अगर वहां पर आता है तो वह खाना खा सके या फिर कुछ सामान ले सके। गांव के लोग सामान लेने के लिए एक तो गोवा विश्वविद्यालय के साननेवाली दुकान पर जाते है या फिर बांबोली में जाते हैं अपनी सुविधा के लिए तो यह एक जरूरी मुद्दा बन जाता है। अगर किसी भी प्रकार से किसी सामान की जरूरत होती हैं तो गांव में एक किराने की दुकान होना बहुत जरूरी है ।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर सिर्फ यही कहा जा सजता हैं की नावशी गाँव सुन्दरता से भरा एक गाँव हैं। उसकी सुंदरता ही उस गाँव की पहचान हैं। मरीना बे से लोग बहोत ग्रस्त हैं और उसके आन से नुकसान किस प्रकार हो सकता हैं इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता हैं जाएगा साथ ही में पर्यावरण पर इसका बहुत गहरा असर होगा। आने वाली पीढ़ी गाँव को नहीं देख पायेगी क्यूकी आने वाले २०-३० सालों में ऐसा लगता हैं की गाँव पूरे खत्म होने के कगार पर होंगे। नयी पीढ़ी पर्यावरण का भी लुत्फ़ नहीं उठा पाएगी। गाँव पूरा एक शहर बनकर रह जाएगा हालांकि शहर में रहना कोई बुरी बात नहीं है विकास तो होना चाहिए पर विकास के नाम पर अगर सब अगर तबाह करने लगे तो उस विकास का कोई मतलब नहीं रहता यह मेरा मानना है।

सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ जब हम सांस्कृतिक परिवेश की बात करते हैं तो आज की पीढ़ी में देखा गया है कि ज्यादातर लोग मोबाइल या फिर अन्य किसी टेक्नालॉजी या फिर किसी और पर निर्भर रहते हैं किसी भी तरह से सांस्कृतिक परिवेश का उन्हें आभास नहीं हो पाता। पर सांस्कृतिक परिवेश को बचाने के लिए हमारे बूढ़े लोग हैं यह काम कर रहे हैं पर यह हमारा भी यह जिम्मा बनता है की सांस्कृतिक परिवेश जो कोई भी हो किसी भी गांव में या फिर किसी भी शहर में या फिर किसी भी जगह पर आप जहाँ रहते हैं उसको सही तरह से बरकरार रखना हैं।

गांव में जब यातायात की सुविधा भी गां अभी तक नहीं की गई है वह तो लोग हैं जो अपनी गाडियों इस्तेमाल करते हैं इस वजह से लोग कुछ काम कर पाते हैं। गांव में नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र भी जीएमसी हैं। स्वास्थ्य को कुछ हो जाने पर वही जाना पडता हैं। पढने के लिए स्कूल सांताक्रुज में है जहा गांव के बच्चे जाते हैं। गाँव में आंगनबाड़ी सिर्फ एक घर में है। गाँव में अन्य जरुरत की सुविधाए उपलब्ध करायी गयी है जैसे पानी, बिजली, नेटवर्क जैसे अन्य सुविधा। लोगो को बाजार से सामान लाने के लिए भी दूर जाना पड़ता है

पूरी तरह से देखा जाये तो गाँव की स्तिथि इतनी भी बुरी हनी हैं जितना हम लोगो ने सोचा था। गाँव में पक्के मकान हैं, लोगो के पास खुदकी गाड़ियाँ हैं, आर्थिक स्तिथि भी ठीक हैं। पर सबसे बड़ी समस्या यही की मरीना बे के आने से जो गाँव आज हम देख रहे हैं वह 1 पल मे ही खत्म हो जायेगा। गाँव को बचाने के लिए सिर्फ सरकार ही मदत कर सकती हैं। जितनी भी कोशिश गाँववाले कर सकते हैं वह कर रहे हैं। पर गाँव को उतनी ही जरुरत सरकार की हैं।